Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 13, Issue 1 | May 2025 - October 2025 | pp. 59-63

मराठा सैन्य परिदृश्य : भारत में यूनेस्को की नई विश्व धरोहर

रूबी मीना

शोधार्थी, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

शोध सारांश

महाराष्ट्र और तमिलनाडु में स्थित ये किले मराठा शासकों की रणनीतिक सैन्य दृष्टि और स्थापत्य कला की कुशलता को दर्शाते हैं, और दर्शाते हैं कि उन्होंने किस प्रकार भूदृश्य को अपनी रक्षा प्रणाली में समाहित किया। "मराठा मिलिट्री लैंडस्केप" का हिंदी में अर्थ "मराठा सैन्य परिदृश्य" है, जिसका मतलब उन 12 किलों और किलाबंद क्षेत्रों के समूह से है जिन्हें 17वीं से 19वीं शताब्दी के दौरान मराठा साम्राज्य ने अपनी सैन्य शक्ति और रणनीतिक कौशल को दर्शाने के लिए बनाया या विकसित किया था। यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल, जिसमें 17वीं और 19वीं शताब्दी के बीच निर्मित 12 किले शामिल हैं। इस जगह में 12 किले शामिल हैं—11 महाराष्ट्र में (सलहेर, शिवनेरी, लोहगढ़, खंडेरी, रायगढ़, राजगढ़, प्रतापगढ़, सुवर्णदुर्ग, पन्हाला, विजयदुर्ग और सिंधुदुर्ग) और एक तमिलनाडु में (जिंजी किला) यह एक ऐसी सैन्य प्रणाली और वास्तुकला का नेटवर्क है जो मराठा शासकों की सैन्य रणनीति और कौशल का प्रतीक है। इन किलों को 2025 में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में भी शामिल किया गया है। "लैंडस्केप" का अर्थ है किसी स्थान की दिखने वाली विशेषताएँ, जिसमें प्राकृतिक (जैसे पहाड़, नदियाँ, जंगल) और मानव निर्मित (जैसे इमारतें, बगीचे) दोनों तत्व शामिल हैं। इसका मतलब किसी क्षेत्र का दृश्य हो सकता है, जिसे एक ही नजर में देखा जा सके। यह कला, वास्तुकला और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में भी इस्तेमाल होता है।

संकेताक्षर—*मराठा, विश्व विरासत, किले, दुर्ग, पहाड़ी, सैन्य परिदृश्य*

प्रस्तावना

मराठा सैन्य परिदृश्य को 2025 में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया। भारत सरकार ने जनवरी 2024 में इसे वर्ष 2024–25 के लिए आधिकारिक नामांकन के रूप में चुना था। महाराष्ट्र में मौजूद 390 से अधिक किलों में से केवल 11 किले और तमिलनाडु का एक किला (जिंजी किला) इस सूची के लिए चयनित हुए।

ये 12 किले—सलहेर, शिवनेरी, लोहगढ़, खंडेरी, रायगढ़, राजगढ़, प्रतापगढ़, सुवर्णदुर्ग, पन्हाला, विजयदुर्ग, सिंधुदुर्ग और जिंजी—मराठा साम्राज्य की रणनीतिक सैन्य शक्ति और स्थापत्य कौशल के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इनका निर्माण 17वीं शताब्दी में छत्रपति शिवाजी महाराज के शासनकाल में आरंभ हुआ और 19वीं शताब्दी में पेशवाओं के काल तक जारी रहा।

अक्टूबर 2024 में यूनेस्को की टीम ने इन किलों का सर्वेक्षण किया, जबकि फरवरी 2025 में आशीष शेलार के नेतृत्व में भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने पेरिस में प्रस्तुति दी। प्रारंभ में कुछ आपत्तियों के बावजूद, भारत की कूटनीतिक प्रतिक्रिया और अंतरराष्ट्रीय समर्थन से जुलाई 2025 में इन्हें विश्व धरोहर का दर्जा प्राप्त हुआ।

ये किले सह्याद्री पर्वत, दक्कन के पठार और कोंकण तट की विविध भौगोलिक परिस्थितियों में फैले हैं, जो मराठा सैन्य रणनीति, वास्तुकला और भूदृश्य समन्वय की अद्वितीय मिसाल प्रस्तुत करते हैं।

ISSN 2348-3857

सलहेर

सलहेर, भारत के महाराष्ट्र राज्य के नासिक जिले की सतना तहसील के सलहेर गाँव के पास स्थित एक स्थान है। सलहेर का पुराना नाम गवलगढ़ था। यह सह्याद्रि पर्वतमाला का सबसे ऊँचा किला और महाराष्ट्र में कलसुबाई के बाद 1,567 मीटर (5,141 फीट) की ऊँचाई पर स्थित दूसरी सबसे ऊँची चोटी और पश्चिमी घाट की 32वीं सबसे ऊँची चोटी का स्थल है। यह मराठा साम्राज्य का एक किला था। सूरत पर आक्रमण के बाद प्राप्त धन मराठा राजधानी किलों की ओर जाते समय सबसे पहले इसी किले में लाया जाता था। सलहेर किला 1671 में श्रीमंत सरदार सूर्यजीराव काकड़े के अधीन था। 1672 में मुगलों ने किले पर आक्रमण किया। इस युद्ध में लगभग एक लाख सैनिकों ने लड़ाई लड़ी।1 इस युद्ध में कई सैनिक मारे गए लेकिन अंततः छत्रपति शिवाजी महाराज ने सूर्यजीराव काकड़े को भेजा जिन्होंने सलहेर का युद्ध जीता। मुगलों और सूर्यजीराव काकड़े की सेना के बीच हुए सभी आमने-सामने के युद्धों में, सलहेर का युद्ध प्रथम स्थान रखता है। सलहेर जीतने के बाद, मराठों ने मुलहेर पर भी कब्जा कर लिया और बगलान क्षेत्र पर अपना शासन स्थापित किया। 18वीं शताब्दी में, पेशवाओं ने और बाद में अंग्रेजों ने इस किले पर कब्जा कर लिया। 1672 में सलहेर के युद्ध में मराठों ने मुगलों को हराया।

शिवनेरी

शिवनेरी किला महाराष्ट्र के पुणे जिले में जुन्नार के पास स्थित एक प्राचीन पहाड़ी दुर्ग है। यह मराठा साम्राज्य के संस्थापक छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्मस्थान है, जिनका जन्म 19 फरवरी 1630 को यहीं हुआ था। किला देवगिरी के यादवों के अधीन था और इसका उपयोग कल्याण बंदरगाह की रक्षा हेतु किया जाता था। बाद में यह बहमनी सल्तनत, फिर अहमदनगर सल्तनत के नियंत्रण में आया। 1595 में अहमदनगर के सुल्तान बहादुर निजाम शाह ने शिवाजी के दादा मालोजी भोसले को यह किला भेंट किया। किला त्रिकोणीय आकार का है और दक्षिण-पश्चिम दिशा में इसका मुख्य प्रवेश द्वार है। इसमें सात सर्पिलाकार द्वार, मिट्टी की दीवारें, प्रार्थना कक्ष, मस्जिद, मकबरा, 'महादरवाजा' और 'जंजीर वाला द्वार' प्रमुख हैं। किले के बीच में 'बादामी तालाब', गंगा-यमुना नामक दो जलस्रोत और राजमाता जीजाबाई व युवा शिवाजी राजे की प्रतिमाएँ हैं।

ब्रिटिश यात्री फ्रेज़ ने 1673 में इसे अजेय बताया था। तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध के बाद 1819 में यह ब्रिटिश शासन के अधीन आ गया। किले के समीप प्रसिद्ध लेण्याद्रि बौद्ध गुफाएँ स्थित हैं। 2021 में शिवनेरी किला यूनेस्को की अस्थायी विश्व धरोहर सूची में "मराठा सैन्य वास्तुकला" के अंतर्गत शामिल किया गया।

लोहागढ़

लोहागढ़ किला महाराष्ट्र के पुणे जिले में लोनावाला के पास स्थित एक प्रसिद्ध पहाड़ी दुर्ग है, जो समुद्र तल से लगभग 1,033 मीटर ऊँचाई पर स्थित है। यह विसापुर किले से एक छोटी पर्वत शृंखला द्वारा जुड़ा हुआ है। लोहागढ़ का निर्माण प्रारंभिक रूप से लोहतामिया राजवंश द्वारा 10वीं शताब्दी में किया गया था और यह लंबे समय तक उनके नियंत्रण में रहा। इतिहास में यह किला सातवाहन, चालुक्य, राष्ट्रकूट, यादव, बहमनी, निजाम, मुगल और मराठा शासन के अधीन रहा। छत्रपति शिवाजी महाराज ने 1648 में इस पर कब्जा किया, पर 1665 में पुरंदर की संधि के तहत इसे मुगलों को सौंपना पड़ा। 1670 में शिवाजी महाराज ने इसे पुनः जीत लिया और सूरत से प्राप्त खजाने को रखने के लिए इसका उपयोग किया। बाद में नाना फडणवीस ने पेशवा काल में इसे अपने निवास और प्रशासनिक केंद्र के रूप में प्रयोग किया तथा यहाँ एक बड़ा तालाब और बावड़ी जैसी संरचनाएँ बनवाईं।

2019 में यहाँ प्राकृत भाषा और ब्राह्मी लिपि में दूसरी या पहली शताब्दी ईसा पूर्व का एक जैन शिलालेख मिला, जिसका अध्ययन डॉ. श्रीकांत प्रधान (डेक्कन कॉलेज) ने किया। शिलालेख "नमो अरिहंताणं" से शुरू होता है, जिससे यह जैन गुफा सिद्ध होती है। इसमें "इडा रक्षिता" नामक व्यक्ति द्वारा जलकुंड और शैलकृत बेंच दान का उल्लेख है।

खंडेरी

खंडेरी किला (अब कान्होजी आंग्रे द्वीप) महाराष्ट्र के तट पर, मुंबई से लगभग 20 किमी दक्षिण और थल-किहिम तट से 5 किमी दूर स्थित एक ऐतिहासिक द्वीप किला है। यह और इसका सहयोगी किला उंडेरी (जयदुर्ग) समुद्री सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण थे। खंडेरी मराठा साम्राज्य के नियंत्रण

में था, जबकि उंडेरी पर सिद्दियों का अधिकार था। द्वीप दो पहाड़ियों से मिलकर बना है, जिनमें पानी के लिए दो कुएँ और श्री बेताल मंदिर हैं। किले में पुरानी तोपें, दाउद पीर की कब्र और एक विशेष "संगीत पत्थर" है जो टकराने पर मधुर ध्वनि निकालता है।

1679 में, छत्रपति शिवाजी महाराज ने मयंक भंडारी के नेतृत्व में इस किले का निर्माण कराया था ताकि मुरुद-जंजीरा किले में स्थित सिद्दियों की गतिविधियों पर नज़र रखी जा सके। यह स्थान मराठों और सिद्दियों के बीच कई नौसैनिक संघर्षों का केंद्र रहा। बाद में 1813 में मनाजी आंग्रे ने इसे पेशवाओं को सौंपा और 1818 में यह ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन आ गया। किला आज भी लगभग सुरक्षित है और इसमें 22 फीट ऊँचा लाइटहाउस है, जो 13 किमी दूर से दिखाई देता है। 1998 में द्वीप का नाम मराठा नौसैनिक प्रमुख कान्होजी आंग्रे के सम्मान में रखा गया। 2013 में इसे पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की योजना बनाई गई।

रायगढ़

रायगढ़ किला, महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के महाड़ शहर में स्थित एक प्राचीन और शक्तिशाली पहाड़ी दुर्ग है। यह सह्याद्री पर्वत श्रृंखला में समुद्र तल से लगभग 1,356 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है और मराठा साम्राज्य के संस्थापक छत्रपति शिवाजी महाराज की राजधानी रहा। मूल रूप से इसे रायरी किला कहा जाता था, जिसका विकास शिवाजी महाराज ने अपने मुख्य अभियंता हिरोजी इंदुलकर के साथ मिलकर किया। 1674 में शिवाजी महाराज का राजाभिषेक यहीं हुआ था, जिससे यह मराठा साम्राज्य का राजनीतिक केंद्र बना। किला लगभग 1,550 निवासियों का घर था और वहाँ पहुँचने के लिए 1,737 सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। आज इसके लिए रायगढ़ रोपवे भी उपलब्ध है। किले का मुख्य प्रवेश महाद्वार कहलाता है, जिसके दोनों ओर विशाल बुर्ज हैं। अंदर राजा का दरबार, रानी के कक्ष, गंगा सागर झील, खुबलाधा बुर्ज, नाने दरवाजा, और हिराकनी बुरुज जैसे ऐतिहासिक स्थल हैं। किले के दरबार में सिंहासन का प्रतिरूप आज भी देखा जा सकता है। किले के अन्य द्वारों में मेना दरवाजा (रानियों के लिए) और पालखी दरवाजा (राजा के लिए) प्रमुख हैं। फाँसी स्थल तकमक टोक, जगदीश्वर मंदिर, और राजमाता जीजाबाई की समाधि इसके प्रमुख आकर्षण हैं। किंवदंती अनुसार, हिरकनी नामक एक ग्वालिन अपने बच्चे के प्रेम में किले की ऊँची चट्टान से उतर आई, जिसकी स्मृति में हिरकनी बुरुज बनाया गया। हेनरी ऑक्सिडेन (1674) ने इसे "कला से अधिक प्रकृति द्वारा सुदृढ़, दुर्गम और अजेय" बताया था।

राजगढ़

राजगढ़ (शाब्दिक अर्थ शासक किला) भारत के महाराष्ट्र राज्य के पुणे जिले में स्थित एक पहाड़ी क्षेत्र का किला है। पूर्व में मुरुम्बदेव के नाम से जाना जाने वाला यह किला लगभग 26 वर्षों तक छत्रपति शिवाजी महाराज के शासन में मराठा साम्राज्य की पहली राजधानी था, जिसके बाद राजधानी को रायगढ़ किले में स्थानांतरित कर दिया गया। निकटवर्ती तोरण नामक किले से प्राप्त खजानों का उपयोग राजगढ़ किले के पूर्ण निर्माण और सुदृढ़ीकरण में किया गया था।

राजगढ़ किला पुणे के दक्षिण-पश्चिम में लगभग 60 किमी (37 मील) और सह्याद्रि पर्वतमाला में नसरपुर से लगभग 15 किमी (9.3 मील) पश्चिम में स्थित है। यह किला समुद्र तल से 1,376 मीटर (4,514 फीट) की ऊँचाई पर स्थित है। किले के आधार का व्यास लगभग 40 किमी (25 मील) था, जिससे इस पर घेराबंदी करना मुश्किल हो गया था, जिससे इसका सामरिक महत्व और भी बढ़ गया। किले के खंडहरों में महल, जलकुंड और गुफाएँ हैं। यह किला मुरुम्बादेवी डोंगर (देवी मुरुम्बा का पर्वत) नामक पहाड़ी पर बना था। राजगढ़ में शिवाजी ने किसी भी किले पर सबसे अधिक दिन बिताए थे।

यह किला कई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं का साक्षी रहा है, जिनमें शिवाजी के पुत्र राजाराम प्रथम का जन्म, शिवाजी की पत्नी सईबाई की मृत्यु, आगरा से शिवाजी की वापसी, बल्ले किला के महादरवाजे में अफजल ख़ान का सिर दफनाना, और शिवाजी को सोनोपंत दबीर के कठोर शब्द शामिल हैं।

प्रतापगढ़

प्रतापगढ़ किला महाराष्ट्र के सतारा जिले में महाबलेश्वर से लगभग 24 किमी दूर स्थित एक ऐतिहासिक पहाड़ी दुर्ग है। यह समुद्र तल से लगभग 1,080 मीटर ऊँचाई पर बना है और अपने ऐतिहासिक युद्ध (10 नवंबर 1659) के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें छत्रपति शिवाजी महाराज ने बीजापुर सल्तनत के सेनापति अफजल खान को पराजित किया था। यह युद्ध मराठा साम्राज्य की नींव साबित हुआ। किले का निर्माण 1656 में

शिवाजी महाराज के आदेश पर उनके प्रधानमंत्री मोरोपंत पिंगले द्वारा किया गया था, ताकि नीरा और कोयना नदियों के तटों और पार दर्रे की रक्षा की जा सके। किला दो भागों में विभाजित है—ऊपरी किला और निचला किला। ऊपरी किले में तुलजा भवानी मंदिर, शिवाजी महाराज की प्रतिमा और निगरानी मीनारें हैं, जबकि निचले किले में मुख्य प्रवेश द्वार स्थित है।

1778 में मंत्री सखाराम बापू बोकिल को नाना फडणवीस ने यहीं कैद किया था। बाद में 1818 में तीसरे आंग्ल-मराठा युद्ध के दौरान यह किला ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन आ गया। आज प्रतापगढ़ किला अपने गौरवशाली इतिहास, भव्य संरचना और सुंदर प्राकृतिक दृश्यों के कारण महाराष्ट्र का एक प्रमुख पर्यटन स्थल और मराठा वीरता का प्रतीक माना जाता है।

सुवर्णदुर्ग

सुवर्णदुर्ग (स्वर्ण किला) एक किला है जो मुंबई और गोवा के बीच अरब सागर में एक छोटे से द्वीप पर, कोंकण में हरनई के पास, भारत के पश्चिमी तट पर, महाराष्ट्र राज्य में स्थित है। मराठी भाषा में सुवनदुर्ग का शाब्दिक अर्थ "स्वर्ण किला" है क्योंकि इसे मराठों का गौरव या "मराठों की स्वर्णिम टोपी का पंख" माना जाता था। आदिलशाह नौसेना द्वारा रक्षा उद्देश्यों के लिए निर्मित इस किले में जहाज निर्माण की सुविधा भी थी। किले की स्थापना का मूल उद्देश्य मुख्यतः यूरोप के उपनिवेशवादियों और स्थानीय सरदारों द्वारा किए गए दुश्मन के हमलों का मुकाबला करना था। पूर्व में, स्थल किला और समुद्री किला एक सुरंग द्वारा जुड़े हुए थे लेकिन अब यह सुरंग बंद हो चुकी है। वर्तमान में समुद्री किले तक केवल हरनई बंदरगाह से नावों द्वारा ही पहुँचा जा सकता है। यह एक संरक्षित स्मारक है। इस किले में तट पर हरनाई बंदरगाह के आधार पर कनकदुर्गा नामक एक छोटा सा भू-किला भी शामिल है। इस किले के निर्माण का श्रेय मराठा साम्राज्य के संस्थापक छत्रपति शिवाजी महाराज को 1660 में दिया जाता है। इसके बाद छत्रपति शिवाजी महाराज, अन्य पेशवाओं और आंग्रों ने रक्षा उद्देश्यों के लिए किलों को और मजबूत बनाया।

पन्हाला किला

पन्हाला किला (जिसे पन्हालगढ़ और पन्हाला (शाब्दिक रूप से "सांपों का घर") के रूप में भी जाना जाता है), भारत के महाराष्ट्र में कोल्हापुर से 20 किलोमीटर उत्तर पश्चिम में पन्हाला में स्थित है। यह रणनीतिक रूप से सह्याद्री पर्वत श्रृंखला में एक दर्रे के ऊपर स्थित है, जो महाराष्ट्र के आंतरिक भाग में बीजापुर से तटीय क्षेत्रों तक एक प्रमुख व्यापार मार्ग था। अपनी रणनीतिक स्थिति के कारण, यह दक्कन में मराठों, मुगलों और छत्रपति शिवाजी महाराज ईस्ट इंडिया कंपनी के पोते अंग्रेजों के साथ कई झड़पों का केंद्र था, जिनमें सबसे उल्लेखनीय पवन खिंड की लड़ाई थी। यहाँ, कोल्हापुर की रानी रीजेंट, ताराबाई रानीसाहेब ने अपने प्रारंभिक वर्ष बिताए थे। किले के कई हिस्से और भीतर की संरचनाएं अभी भी बरकरार हैं।

विजयदुर्ग

विजयदुर्ग (विजियादुर्ग), सिंधुदुर्ग तट पर स्थित सबसे प्राचीन किला, शिलाहार वंश के राजा भोज द्वितीय (निर्माण काल 1193-1205) के शासनकाल में निर्मित हुआ था और शिवाजी द्वारा इसका पुनर्निर्माण किया गया था। पहले यह किला 5 एकड़ (20,000 वर्ग मीटर) क्षेत्र में फैला था और चारों ओर से समुद्र से घिरा हुआ था। समय के साथ पूर्वी खाई का पुनः दावा किया गया और उस पर एक सड़क का निर्माण किया गया। वर्तमान में किले का क्षेत्रफल लगभग 17 एकड़ (69,000 वर्ग मीटर) है और यह तीन ओर से अरब सागर से घिरा हुआ है। शिवाजी ने पूर्वी दिशा में 36 मीटर ऊँची तीन दीवारें बनवाकर किले के क्षेत्रफल का विस्तार किया। उन्होंने 20 बुर्ज भी बनवाए। विजयदुर्ग किले को "पूर्वी जिब्राल्टर" कहा जाता था, क्योंकि यह लगभग अभेद्य था। इसके स्थानिक लाभों में 40 किलोमीटर लंबी वाघोटन/रेपाटन खाड़ी शामिल है। बड़े जहाज इस खाड़ी के उथले पानी में प्रवेश नहीं कर सकते। इसके अलावा मराठा युद्धपोत इस खाड़ी में लंगर डाले हुए भी समुद्र से अदृश्य रह सकते थे। यह एक संरक्षित स्मारक है।

सिंधुदुर्ग

सिंधुदुर्ग किला पश्चिमी भारत में महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र के पास अरब सागर में स्थित एक ऐतिहासिक समुद्री किला है। छत्रपति शिवाजी द्वारा कमीशन किया गया किला 1664 और 1667 के बीच बनाया गया था। यह किला महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र में सिंधुदुर्ग जिले के मालवन तालुका के तट पर मुंबई से 450 किलोमीटर (280 मील) दक्षिण में स्थित है। यह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के तहत एक संरक्षित स्मारक है। सिंधुदुर्ग द्वीप-किला मराठा साम्राज्य के संस्थापक शिवाजी

प्रथम के अधीन बनाया गया था। किले की आधारशिला 25 नवंबर 1664 को रखी गई थी। निर्माण की देखरेख हिरोजी इंदुलकर ने की थी जिन्होंने गोवा के पुर्तगाली इंजीनियरों से सहायता ली थी। किले का मुख्य उद्देश्य कोंकण तट पर अंग्रेजी, डच, फ्रांसीसी और पुर्तगाली व्यापारियों के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला करना और जंजीरा के सिद्धियों के उदय पर अंकुश लगाना था। किला एक छोटे से द्वीप पर बनाया गया था जिसे खुर्ते द्वीप के नाम से जाना जाता था।

जिंजी किला

भारत के तमिलनाडु राज्य में स्थित जिंजी किला या सेंजी किला (जिसे चेन्जी, चांची, जिंजी या सेन्ची के नाम से भी जाना जाता है) तमिलनाडु राज्य के बचे हुए किलों में से एक है। इसे दक्षिण भारत की महान दीवार के नाम से भी जाना जाता है। यह विल्लुपुरम जिले में स्थित है, जो राज्य की राजधानी चेन्नई से 160 किलोमीटर (99 मील) दूर है और केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी के करीब है। इसे "भारत का सबसे अभेद्य किला" माना जाता है और अंग्रेजों ने इसे "पूर्व का ट्रॉय" कहा था। ओट्टकूथर के मूवरुला में लगभग 1123 ईस्वी में मूल रूप से इसका उल्लेख सेंजियार कोन नामक एक कदव राजा के क्षेत्र के रूप में किया गया है। इस किले का निर्माण किसी भी आक्रमणकारी सेना से बचाव के लिए एक रणनीतिक स्थान के रूप में किया गया था। एक विवरण के अनुसार, 15-16वीं शताब्दी के दौरान किले को और भी मजबूत बनाया गया था। यह किला 1677 ई. में शिवाजी के नेतृत्व में मराठों के लिए सूबेदार हरजी राजमहादिक द्वारा स्वराज्य के लिए जीता गया था। इसके बाद इसे बीजापुर के सुल्तानों, मुगलों, कर्नाटक के नवाबों, फ्रांसीसियों और अंततः 1761 में अंग्रेजों ने जीत लिया। यह किला राजा तेज सिंह से निकटता से जुड़ा है, जिन्होंने अर्काट के नवाब के खिलाफ असफल विद्रोह किया था और अंततः एक युद्ध में अपनी जान गंवा दी थी।

निष्कर्ष

महाराष्ट्र और तमिलनाडु में बने मराठा साम्राज्य के 12 किले हमारी सांस्कृतिक धरोहर है जिसके अध्ययन से मराठा सरदारों के रण कौशल और उनके द्वारा निर्मित अभेध किलों की जानकारी मिलती है किस प्रकार मराठा सरदारों ने मजबूत किले बनाये और अपने साम्राज्य का सफल संचालन किया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुणाजी, मिलिंद, ओफ्फबीट ट्रैक्स इन महाराष्ट्र, पॉपुलर प्रकाशन, 2003, पृ.सं. 69, आईएसबीएन 81-7154-669-2
2. खान, आश्विन, शिवनेरी फोर्ट : अनकवर द पास्ट, पुणे मिरर, जून 24, 2019
3. पारेख, रुजुता, जैन इंस्क्रिप्शन दिस्कोवेरेड ऑन वाल ऑफ रॉक-कट केव एट लोहगड फोर्ट, द टाइम्स ऑफ इंडिया, 7 अक्टूबर 2019
4. राउ, रत्नाकर गोविन्द, शिवाजी'ज वारियर, ओरिएंट लोंगमेन लिमिटेड, हैदराबाद, 1997, पृ.सं. 104, आईएसबीएन 81-25007-74-1
5. महाजन, राजेंद्र, म्यूजिकल स्टोन एट खंडेरी फोर्ट, वीडियो -यू ट्यूब , 2013
6. इंडियन नेवी-मेरीटाइम हेरिटेज ऑफ इंडिया, 2016, आईएसबीएन 978-8189884-97-0
7. सरकार, जदुनाथ, शिवाजी एंड हिज टाइम्स : ओरिएंट ब्लैकस्वान, मुंबई, 2010, पृ.सं. 215, आईएसबीएन 978-8125040262
8. होइबर्ग, डेल, एवं रामचंदानी, इंदू, स्टूडेंट्स ब्रिटैनिका इंडिया, पॉपुलर प्रकाशन, 2000, पृ.सं. 401-402, आईएसबीएन 0-85229-762-9
9. रायगढ़, इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इंडिया ,वॉल्यूम 21, 1909, पृ.सं. 47-48
10. वर्मा, अमृत, फोट्र्स ऑफ इंडिया, नई दिल्ली : द डायरेक्टर ऑफ पब्लिकेशन डिवीजन मिनिस्ट्री ऑफ इनफार्मेशन एंड ब्राडकास्टिंग गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, 1985, पृ.सं. 86-89, आईएसबीएन 81-230-1002-8
11. गुणाजी, मिलिंद, पूर्वोक्त, पृ.सं. 41
12. सेन, शैलेन्द्र, ए टेक्स्टबुक ऑफ मिडिवल इंडियन हिस्ट्री, प्राइमस बुक्स, 2013, पृ.सं. 207, आईइसबीएन 978-9-38060-734-4
13. ईटन, रिचर्ड मैक्सवेल, द न्यू कैंब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2005, पृ.सं. 180-194, आईएसबीएन 0-521-25484-1
14. सेन, शैलेन्द्र, पूर्वोक्त, पं.सं. 207
15. हिल्तेबेटेल, अल्फ, द कल्ट ऑफ द्रौपदी : मैथोलोजिज : फ्रॉम गिंगी टू कुरुक्षेत्र, वॉल्यूम 1 यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो, 1991, पृ.सं. 450, आईएसबीएन 81-208-1000-7